रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

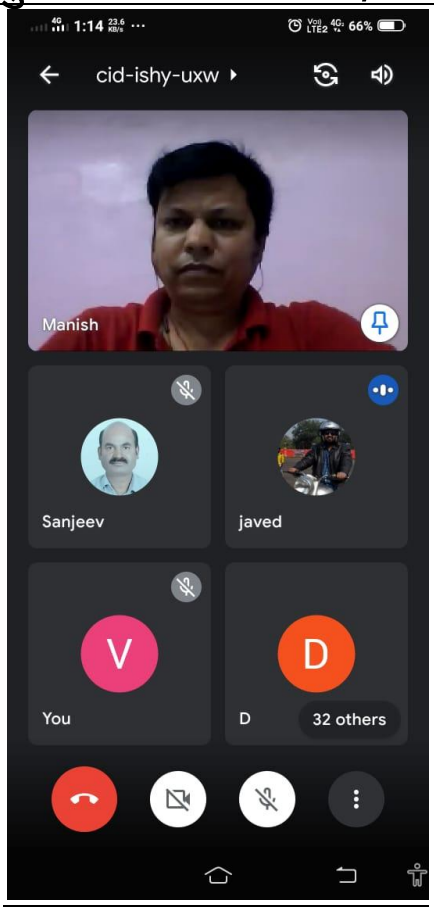

कल्याणकारी सोच और उपचारात्मक संबंध स्थापित करना है महत्वपूर्ण–कुलपति प्रो. मिश्र
जीव विज्ञान विभाग एवं स्किल डेव्लपमेन्ट इंस्टिट्यूट द्वारा ऑनलाईन वेबिनार का आयोजन

जबलपुर 22 मई। वर्तमान तथा भविष्य में आने वाली किन्ही भी आपदाओं से निपटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को नैतिक, आंतरिक एवं सामाजिक मूल्यों पर भी मजबूत होना होगा। प्रकृति के साथ समन्वयता स्थापित करना हमारा परम् उद्देश्य होना चाहिए। एक कल्याणकारी सोच अपनाना और उपचारात्मक संबंध स्थापित करना सामाजिक कार्य से अनन्य नहीं है। इन दोनों को सम्मिलित करना व्यक्ति की भूमिका को विशिष्ट बनाता है। उपरोक्त उद्गार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने शनिवार को आयोजित ऑनलाईन राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग तथा व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास संस्थान एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, महाकौशल प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में 'वर्तमान चिकित्सा परिदृश्य को ध्यान में रखकर जैविक ऑक्सीजन उत्पादन की रणनीतियां' विषय पर आयोजित एक दिवसीय ऑनलाईन राष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने जैव विविधता के विभिन्न आयामों के साथ उससे जुड़े व्यक्तिगत एवं सामाजिक पहलुओं की ज्ञानपरक जानकारी प्रदान की। इन्होंने भारत वर्ष के प्रतिकूल पर्यावरणीय परिवर्तन के वर्तमान

स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने विचार दिए की हमें मानसिक एवं शारीरिक रूप से मजबूत होने की आवश्यकता है।

शैवालों के प्रयोग से भी कराया परिचित–

कार्यक्रम की शुरुआत देवी सरस्वती के आवाह्न एवं अखिलेश कुमार मिश्र द्वारा मंत्रोच्चरण के साथ हुई। स्वागत जीव विज्ञान संकाय के वरिष्ठ आचार्य एवं विवि कौशल विकास केंद्र निदेशक प्रो. सुरेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं रूपरेखा की जानकारी आयोजन संयोजक प्रोफेसर सुवेन्द्र नाथ बागची, विभागाध्यक्ष जीव विज्ञान विभाग द्वारा प्रस्तुत करते हुए शैवालों के प्रयोग से भी प्रतिभागियों को अवगत करवाया। विशिष्ट अतिथि श्री संजय स्वामी राष्ट्रीय समन्वयक, राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा, नई दिल्ली एवं रादुविवि प्रभारी कुलसचिव प्रो. नीलकंठ पेंडसे ने अपने उत्साहवर्धक तथा ज्ञानवर्धक उद्धबोधन से प्रतिभागियों को जागरूक किया।

विविध सत्रों के आयोजन –

ऑनलाईन राष्ट्रीय वेबिनार में प्रो. राजेन्द्र कुरारिया, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, महाकौशल प्रांत ने न्यास के समाजोपयोगी एवं उद्देश्यपरक कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया। द्वितीय तकनीकी सत्र में प्रो. शिव मोहन प्रसाद, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी प्रयागराज ने प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से वायुमण्डल में ऑक्सीजन की उपलब्धता के विषय में जानकारी प्रदान की। प्रो. रवि कुमार अस्थाना, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी वाराणसी ने वायु की उत्पत्ति एवं वर्तमान में जैविक मंडल में कृत्रिम परिवर्तन से होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला। प्रो. आशीष भटनागर, महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी अजमेर ने जैविक वायु उत्पादन पर जानकारी प्रदान की। आभार प्रदर्शन प्रो. सुवेंद्र नाथ बागची एवं प्रो. राम कुमार रजक ने दिया। आयोजन के संचालन में डॉ. रेनू पाठक, डॉ. दिव्या सिंह, डॉ. पूर्णिमा ब्यौहार, डॉ. प्रशांत का सक्रिय योगदान रहा।

वर्तमान परिदृश्य में चुनौतिपूर्ण कार्य है पत्रकारिता– मनीष दीक्षित
– रादुविवि पत्रकारिता विभाग द्वारा ई–व्याख्यान का आयोजन

जबलपुर 22 मई। वर्तमान परिदृश्य में पत्रकारिता चुनौतीपूर्ण कार्य है। आज की परिस्थितियों में पत्रकारिता का उद्देश्य समाज और देशहित होना चाहिए। क्षेत्रीय मीडिया से लेकर राष्ट्रीय मीडिया को इस बात का ध्यान रखना है कि वह बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय के सिद्धांत पर काम करना है। वर्तमान समय में किसी भी विषय में पत्रकारों का नजरिया व्यापक दृष्टिकोण वाला होना चाहिए। उपरोक्त विचार इंडिया टुडे ग्रुप, नई दिल्ली से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार श्री मनीष दीक्षित ने शनिवार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में आयोजित ई–व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किए।

रादुविवि के संचार अध्ययन एवं शोध विभाग (पत्रकारिता विभाग) द्वारा 'क्षेत्रीय पत्रकारिता से राष्ट्रीय पत्रकारिता तक का सफर' विषय पर आयोजित ई–व्याख्यान में विषय प्रवर्तन करते हुए संकायाध्यक्ष एवं पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र कर एक मजबूत स्तम्भ माना जाता है। पत्रकारिता सरकार और जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह जनता और सरकार के बीच सामंजस्य बनाने में मदद करता है। अत्यधिक व्यावसायीकरण से इसकी हालत दयनीय हो रही है। क्षेत्रीय मीडिया और राष्ट्रीय मीडिया के हालातों के बीच के अंतर से इसका अंदाजा लगया जा सकता है। ई– व्याख्यान में मुख्य वक्ता श्री मनीष दीक्षित ने बताया कि आजादी के पश्चात पत्रकारिता और लोकशाही को जिन बुलंदियों तक पहुंचाया था, सत्तर के दशक में उन मूल्यों में बहुत अधिक क्षरण हो गया था। पत्रकारिता में क्षरण का खतरा आज भी बना हुआ

है। चारण पत्रकारिता सत्ताधारी पार्टियों की सबसे बड़ी दुश्मन है क्योंकि वह सत्य पर पर्दा डालती है और सरकारें गलत फैसला लेती हैं। ऐसे माहौल में क्षेत्रीय मीडिया से लेकर राष्ट्रीय मीडिया को निष्पक्ष और निडर बने रहने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों से हुआ रोचक संवाद–

ई–व्याख्यान में पत्रकारिता के विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नों के माध्यम से अपनी जिज्ञासाओं को मुख्य वक्ता श्री दीक्षित के समक्ष व्यक्त किया गया, रोचकता भरे इस संवाद कार्यक्रम में मुख्य वक्ता द्वारा प्रश्नों के उत्तर सटीकता से दिये गए। स्वागत एवं अतिथि परिचय पत्रकारिता विभाग अतिथि विद्वान डॉ. संजीव श्रीवास्तव ने दिया। संचालन संकायाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक एवं आभार प्रदर्शन पत्रकारिता विभाग अतिथि विद्वान डॉ. मोहम्मद जावेद ने किया। ई–व्याख्यान के आयोजन में अतिथि विद्वान डॉ. शैलेष प्रसाद, डॉ. प्रमोद पाण्डेय, डॉ. मोहनिका गजभिये का सक्रिय योगदान रहा। इस अवसर पर बीएएमसी, बीजेसी, एमएएमसी, एमजेसी के छात्र–छात्राएं एवं अन्य प्रतिभागी मौजूद रहे।